Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

नवंबर/2022 ई

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

November-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

Date of Publication:5-11-2022

21-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के अवसर पर लगाए गए प्रदर्शनी का प्रारम्भ करते हुए श्री अताउल मुजीब लोन साहब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत ।

21-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत से पहले अंसारुल्लाह का झंडा लहराने के बाद सामूहिक प्रार्थना करवाते हुए श्री अताउल मुजीब लोन साहब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत।

22-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत में आयोजित म्यूजिकल चेयर मुक़ाबिला के इनामात वितरण करते हुए श्री अताउल मुजीब लोन साहब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत ।

21-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के अवसर पर आयोजित मजलिसे शूरा के स्टेज का एक दृश्य ।

23-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इख़्तितामि इजलास में इनामात वितरण करते हुए श्री हाफ़िज़ मखदूम शरीफ़ साहब एडीशनल नज़ीर आला दक्षिण भारत ।

23-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इख़्तितामि इजलास में इनामात वितरण करते हुए श्री मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहिब सदर, सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान ।

23-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के अवसर पर आयोजित मुक़ाबिला तक़रीर में अध्यक्षता करते हुए श्री तनवीर अहमद साहब उपाध्यक्ष अंसारुल्लाह दक्षिण भारत।

23-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के अवसर पर आयोजित मुक़ाबिला नज़्म में अध्यक्षता करते हुए श्री वसीम अहमद साहब नाज़िम ज़िला महबूबनगर (तेलंगाना)

23-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इख़्तितामि इजलास में मुवाज़ना मजलिस भारत में प्रथम इनाम हासिल करते हुए श्री मामूनुर्रशीद तबरेज़ साहिब ज़इमे आला क़ादियान तथा उन की टीम।

23-10-2022 को सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इख़्तितामि इजलास में शुक्रिया **अहबाब** पेश करते हुए श्री रफ़ीक़ अहमद बेग साहब सदर इज्तिमा कमिटी।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 नवम्बर 2022 **Issue - 11**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - आँहज़रत सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त का एक महान चिन्ह निशान।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन दुनियादार इन्सान नेक वारिस किस तरह माँगेगा	6
श्रवण शक्ति का महत्तव और आवश्यकता	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ○

(सूरत अनफाल: आयत 29)

अनुवाद - और जान लू कि तुम्हारे कर्म और तुम्हारी औलाद केवल एक परीक्षा है और ये (भी कि अल्लाह के पास एक बहुत बड़ा बदला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ○

(सूरत अलमुनाफेक़ून: आयत 10)

अनुवाद - हे लोगो जो ईमान लाए हो तुम्हें तुम्हारे कर्म और तुम्हारी औलाद अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करें तो यही हैं जो घाटा खाने वाले हैं।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :مَنْ جَلَسَ فِیْ مَجْلِسٍ فَكَثُرَ فِيْهِ لَغَطُهٗ فَقَالَ قَبْلَ اَنْ يَّقُوْمَ مِنْ مَّجْلِسِهٖ ذٰلِكَ:سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ، اِلَّا غُفِرَ لَهٗ مَا كَانَ فِیْ مَجْلِسِهٖ ذٰلِكَ (अबू दाऊद)

अनुवाद - हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि मैंने फ़ातिमा रज़ि से बढ़कर शक्ल- तथा सूरत, चाल-ढाल और गुफ़्तगु में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समान किसी और को नहीं देखा । फ़ातिमा रज़ि जब कभी हज़ूर रज़ि से मिलने आतीं तो हज़ूर उनके लिए खड़े हो जाते उनके हाथ को पकड़ को चूमते। अपने बैठने की जगह पर बिठाते। इसी तरजब हज़ूर मिलने के लिए फ़ातिमा रज़ि के यहां तशरीफ़ ले जाते तो वह खड़ी हो जातीं। हज़ूर के मुबारक हाथ को चूमतीं और अपनी ख़ास बैठने की जगह पर हज़ूर को बिठातीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

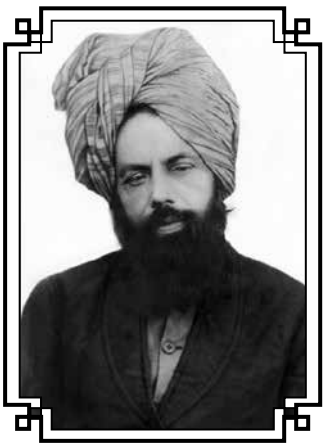

माता पिता की दुआ को बच्चों के हक़ में विशेष रूप से क़बूलियत प्रदान की गई है

"काश दुआ में लग जाएं और बच्चों के लिए दिल के वेदना से दुआ करने को एक जज़्ब ठहरा लें। इस लिए कि माता पिता की दुआ को बच्चों के हक़ में ख़ास क़बूल बख़्शा गया है। हुज़ूर की कुछ दुआएं फ़रमाया: मैं निरन्तरता से कुछ दुआएं रोज़ मांगता हूँ। प्रथन मैं अपने नफ़्स के लिए दुआ मांगता हूँ कि ख़ुदा तआला मुझसे वह काम ले,जिससे उस की इज़्ज़त तथा प्रताप प्रकट हो और अपनी रज़ा क़ी पूरी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। दिवत्तीय फिर अपने घर के लोगों के लिए दुआ मांगता हूँ कि उनसे आंखों की ठन्डक नसीब हो और अल्लाह तआला की इच्छाओं के मार्ग पर चलें। तृतीय फिर अपने बच्चों के लिए दुआ मांगता हूँ कि ये सब धर्म के सेवक बनें। चतुर्थ फिर अपने मुख़लिस दोस्तों के लिए नाम ले लेकर। पन्चम और फिर इन सब के लिए जो इस सिलसिला से जुड़ें हैं चाहे उन्हें हम जानते हैं या नहीं जानते।

फ़रमाया: हिदायत और तर्बीयत हक़ीक़ी ख़ुदा का काम है। सख़्त पीछा करना और एक बात पर इसरार को सीमा से बढ़ा देना अर्थात बात बात पर बच्चों को रोकना और टोकना यह प्रकट करता है कि मानो हम ही हिदायत के मालिक हैं। और हम इस को अपनी इच्छा के अनुसार एक राह पर ले आएँगे। यह एक प्रकार का छुपा हुआ शिर्क है। इस से हमारी जमाअत को बचना करना चाहिए। आपने स्पष्ट रूप से फ़रमाया और लिख कर भी इरशाद किया कि हमारे मदरसे में जो उस्ताद मारने की आदत रखता है और अपने इस ना सज़ा काम से रुकता न हो,उसे शीघ्र निकाल दें। फ़रमाया: हम तो अपने बच्चों के लिए दुआ करते हैं और सरसरी तौर पर क़वाइद और आदाब तालीम की पाबंदी कराते हैं। बस इस से ज़्यादा हैं। और फिर अपना भरोसा अल्लाह तआला पर रखते हैं। जैसा किसी नेकी का बीज होगा। वक़्त पर हरा हो जाएगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 सफ़ा 309)

मरे मौला मरी यह इक दुआ है
वह दे मुझको जो इस दिल में भरा है
मरी औलाद जो तेरी अता है
तरी क़ुदरत के आगे रोक क्या है
अजब मुहसिन है तो बहुरु अलायादी
नजात उन को अता कर गंदगी से
रहें ख़ुशहाल और फ़र्र ख़ुंदगी से
वे हूँ मेरी तरह दीं के मुनादी

तरी दरगाह में इजुज़-ओ-बुका है
ज़ुबां चलती नहीं शर्म-ओ-हया है
हर इक को देख लूं वह पारसा है
वो सब दे उन को जो मुझको दिया है
फ़सुबहानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी
बराअत उनको अता कर बंदगी से
बचाना ऐ ख़ुदा बद ज़िंदगी से
फ़सुबहानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

(दुर्रसमीन)

सम्पादकीय

आँहज़रत सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त का एक महान चिन्ह निशान।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इस युग में इस्लाम की विजय के लिए मबऊस फ़रमाया है। आप के बारे में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्वाणी फ़रमाई थी कि فَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْر (बुख़ारी। किताबुल अंबिया)अर्थात वह सलीब को तोड़ेगा, सूअर को क़त्ल करेगा। अर्थात दज्जाली ताक़तों का मुक़ाबला करके उन पर इस्लाम की सच्चाई को प्रमाणित करना। यह काम जिस तरह से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सरअंजाम दिया वह अपने आप में आप के दावा मसीहीयत तथा महदवियत की सच्चाई का सबूत बन गया। जिसका एक महान निशान डोई की इबरत वाली हलाक़त है।

जान इलैगज़ेंडर डोई John (Alexander Dowie 25 मई 1947 ई को एडिनबरा Edinburgh) अस्काटलैंड में पैदा हुआ। 1868 ई में 20 साल की उम्र में उसने एडिनबरा यूनीवर्सिटी में Theology की शिक्षा प्राप्त करके बहुत शीघ्र एक सफल पादरी ओर वक्ता के रूप में उभरा। अस्काटलैंड,आस्ट्रेलिया में काम करने के इस ने 1888 में अमरीका हिजरत की। 1890 में डोई ने मसीह के दावेदार Jacob Schweinfurth से दौरान गुफ़्तगु अपनी बरतरी के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में गुस्ताख़ाना टिप्पणी की। जबकि इसी दौरान शेरे ख़ुदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया: "मसीह के नाम पर यह विनीत भेजा गया ताकि सलीबी एतिक़ाद टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए।"(फ़तह इस्लाम : पृष्ठ11 हाशिया)

डोई ने ईसा मसीह को ख़ुदा क़रार दिया, ख़ुद नबी होने का दावा कर दिया और बीस साल में इस्लाम के ख़ात्मा की भविष्वाणी कर दी। जिससे उस की शौहरत बड़ी तेज़ी से फैलने लगी, दौलत जमा होना शुरू हुई। अख़बारों के द्वारा इस बात का ज्ञान जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हुआ तो आप ने बहुत नर्मी से समझाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुस्ताख़ी और क़ुरआन-ए-करीम पर आरोपों को छोड़ दे इस से मुस्लमानों की भावनाएं आहत होती हैं। परन्तु वह न रुका आया। अन्त में आप ने उसे मुबाहला का चैलेंज दिया। जिसकी विस्तार और डोई के अफ़सोस वाले अंजाम का वर्णन करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं।

" अपनी तहरीरों में मिस्टर डोई ने बड़े गर्व के अंदाज़ में इस को ईसाईयत और इस्लाम के मध्य महान जंग क़रार दिया। उसने लिखा कि अगर मुस्लमान ईसाईयत क़बूल न करें तो वे हलाकत तथा तबाही में पीड़ित होंगे ...इन वर्णनों और उपहास के उत्तर में, आप अलैहिस्सलाम ने मिस्टर डोई को मुबाहला का चैलेंज दिया ...इस चैलेंज के बाद मिस्टर डोई ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध इंतिहाई उनुचित तरीक़ा धारण किया। अत: रिपोर्ट हुआ है कि मिस्टर डोई ने कहा "'हिन्दुस्तान में एक मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है... तुम ख़्याल करते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खियों का जवाब दूँगा, अगर मैं उन पर अपना पांव रखों तो

मैं उनको कुचल कर मार डालूँगा''...समस्त दुनियावी सामानों की कमी के बावजूद शीघ्र ही नतीजे आप अलैहिस्सलाम के हक़ में पलट गए। एक के बाद एक ऐसी घटनाएं हुईं कि डोई का समर्थ जाता रहा और इस की दौलत, जिस्मानी और ज़हनी सलाहीयतें ख़त्म हो गईं। अन्त में वह अपने अंजाम को पहुंचा जिसको यूएस मीडिया ने "महान अंजाम"क़रार दिया। अवश्य ही उस समय का यूएस ए की मीडिया सम्मान योग्य है जिसने ईमानदारी से इस की रिपोर्टिंग की।"

(ख़िताब 1 अक्तूबर 2022 ई अल्फ़ज़ल 22 अक्तूबर 2022 ई)

मुक़ाबिल पे मरे ये लोग हारे
कहाँ मरते थे पर तो ने ही मारे

डोई के घर वालों ने ने उस से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया, सारा माल जाता रहा, उसी का आबाद किए शहर से वह ख़ुद निकाला गया,फ़ालिज का हमला हुआ,चलने फिरने से अक्षम हो गया,हब्शी ग़ुलाम इसे उठाए फिरते थे,जुनून का शिकार हुआ। सारांक्ष इंतिहाई हसरत वाली मौत का शिकार हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त का महान निशान बना। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला उस के शहर ज़ाइन "मस्जिद फ़तह अज़ीम" का उद्घाटन फ़रमाने से यह पेशगोई एक नए रूप में में पूरी हुई। अल्लाह तआला इस पेशगोई को और अधिक व्यापक्ता प्रदान करे। आमीन।

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

दुनियादार इन्सान नेक वारिस किस तरह माँगेगा

तर्बीयत अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जो "र-ब-ब" अक्षरों से बना है। इस के कोश के अर्थ रुश्द-ओ-नशव-ओ-नुमा(नेकी तथा बढ़ना) और बच्चे के सुधार के लिए बेहतरीन कामों के करने के हैं। (ताजुल उरूस) की परिभाषा में तर्बीयत का अर्थ ऐसा माहौल और माध्यम उपलब्ध करना है जिससे बच्चों की छुपी हुई योग्यताएं प्रकट हो जाएं। बच्चे के अंदर इन उच्च विशेषताओं को उभार देना और छुपी योगय्ताओं को सामने लाने तर्बीयत कहलाता है।

यह हक़ीक़त है कि यदि औलाद की सही तर्बीयत की जाए तो वह आँखों का नूर और दिल का आन्नद भी होती है। परन्तु अगर औलाद बिगड़ जाए और इस की सही तर्बीयत न की जाए तो वही औलाद परीक्षा बन जाती है। इसी लिए इस्लाम में औलाद की तर्बीयत एक कर्तव्य की हैसियत रखती है। क्योंकि जिस तरह माता पिता के औलाद पर अधिकार हैं इसी तरह औलाद के माता पिता पर अधिकार हैं और जैसे अल्लाह तआला ने हमें माता पिता के साथ नेकी करने का हुक्म दिया है ऐसे ही उसने हमें औलाद की बेहतरीन तर्बीयत करनी सिखाया है।

एक जगह अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (अत्तहरीम 7)

अनुवाद: हे लोगो जो ईमान लाए हो अपने आपको और अपने अहल-ओ-अयाल को आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बच्चों के एहसासात का उस क़दर ख़्याल रखते थे कि फ़रमाया जब बच्ची छः साल की हो जाएगी तो उसे चूमा न जाए और बच्चा सात साल का हो जाए तो उसे चूमा ना जाए। (तबरी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثٍ، صَدَقَةٌ جَارِيَةٌ، وَعِلْمٌ يُنْتَفَعُ بِهِ، وَوَلَدٌ صَالِحٌ يَدْعُو لَهُ (मुस्लिम)

अर्थात"जब इन्सान को मौत आ लेती है तो हर किस्म के कर्म का सम्बन्ध इस से कट जाता है ,परन्तु तीन किस्म के कर्म ऐसे हैं जिनसे उस को बराबर सवाब पहुंचता रहता है और वे ये हैं (1) सदैव जारी रहने वाला सदक़ा (2)ज्ञान जिससे लोग लाभ उठाएं (3) नेक औलाद जो उस के लिए दुआ ख़ैर करती रहे।"

हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेन्सेहिल-अज़ीज़ ने इंतिहाई व्यस्तता के बावजूद अमरीका

के दौरा से वापस तशरीफ़ लाते ही दिनांक 20 अक्तूबर 2022 ई को अपने ईमान वर्धक पैग़ाम सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत के लिए इस साल फ़रमाया है जिसमें हुज़ूर अनवर तर्बीयत औलाद की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं

"इस बात में कोई शक नहीं कि बच्चों की तर्बीयत कोई आसान काम नहीं और खासतौर पर इस ज़माना में जब क़दम-क़दम पर शैतान की पैदा की हुई दिलचस्पियाँ विभिन्न रंग में हर-रोज़ हमारे सामने आ रही हों तो यह बहुत मुश्किल काम है लेकिन अल्लाह तआला ने जब दुआएं और तरीक़ा बताए हैं तो इस लिए कि अगर हम चाहें तो ख़ुद भी और अपने बच्चों को भी शैतान के हमलों से बचा सकते हैं।"

(पैग़ाम सालाना इज्तिमा मज्लिस अल्लाह भारत 2022 ई)

फिर हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं।

"औलाद की दुआ केवल इस लिए नहीं कि औलाद हो जाए और वारिस पैदा हो जाएं जो दुनियावी मामलों के वारिस हूँ बल्कि ऐसे वारिस अल्लाह तआला की तरफ़ से प्रदान हों जो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता रखने वाले हों और ज़ाहिर है ऐसी दुआ वही लोग मांग सकते हैं जो ख़ुद भी धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले हैं। यदि दुनियादारी में इन्सान डूबा हुआ है तो नेक वारिस किस तरह माँगेगा। (इसी तरह)

मुअज़्ज़िज़ अन्सार ! आइन्दा इज्तिमा तक के लिए यह हमारा पहला लाहे अमल है। अल्लाह तआला हमें इस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

श्रवण शक्ति का महत्तव और आवश्यकता

(दिलावर ख़ान, नज़ारत इस्लाहो -इरशाद मर्कज़िया क़ादियान)

इन्सान के शुक्र और नाशुक्री का ज़िक्र

(1) सूरत रहमान में अल्लाह तआला बार बार जिन तथा इन्सान को सम्बोधित कर के फ़रमाता है कि तुम दोनों ख़ुदा की किस किस नेअमत का इन्कार करोगे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह में फ़रमाते हैं।

"जिन तथा इन्सान को सम्बोधित कर के इस बात की बकसरत तकरार है कि तुम दोनों आख़िर ख़ुदा की किस किस नेअमत का इन्कार करोगे। और इसी सम्बन्ध में जिन तथा इन्सान की पैदाइश का फ़र्क़ भी वर्णन फ़र्मा दिया कि जिन को आग के शोलों से पैदा किया गया।

(तर्जमा-क़ुरआन हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह अलराबा पृष्ठ 973)

एक तंदरुस्त आदमी अपनी पैदाइश की उद्देश्य को अच्छी तरह पूरी कर सकता है लेकिन अगर कोई आदमी अन्धा है वह भी अपने कान के द्वारा सुन कर जो बात समझ न आए बोल कर, पूछ कर हर किस्म का दीनी और दुनियावी इल्म सीख लेता है। क़ुरआन-ए-मजीद को सुन सकता है और समझ सकता है। अपनी ज़बान से दुआ मांग सकता है। फिर नेक कर्म कर के अल्लाह तआला की रज़ा और प्यार की नज़र हासिल कर सकता है। इस से मालूम हुआ कि इन्सान को अपनी पैदाइश की ग़रज़ पूरा करने के लिए कान की ज़रूरत है।

अदरणीय डाक्टर चौधरी शाह नवाज़ साहिब ने श्रवण शक्ति के महत्तव और ज़रूरत पर फ़लसफ़ियाना नज़र" पर एक निबन्ध लिखा था जो रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ उर्दू जुलाई 1926 ई में प्रकाशित हुआ है। नीचे इस का कुछ हिस्सा प्रस्तुत है

श्रवण शक्ति का महत्तव और ज़रूरत पर दार्शनिक दृष्टि

हमारा यह दावा है कि क़ुरआन-ए-करीम जो सारी दुनिया के लिए आख़िरी और सम्पूर्ण हिदायत है अपने अंदर अजीब मार्फ़त और हिक्मत की बातें रखता है। अत: इस दावा की सच्चाई के सबूत ज्ञान की तरक़्क़ी से आए दिन हम को मिलते रहते हैं। इस के इलावा हम यह भी कहते हैं कि क़ुरआन करीम के न सिर्फ अहकाम और आयात और अलफ़ाज़ ही हिक्मत वाले हैं। बल्कि उन आयतों की तर्तीब भी हिक्मत पर आधारित है। बल्कि में तो यहां तक समझता हूँ कि क़ुरआन मजीद के विभिन्न शब्दों का क्रम भी हिक्मत से ख़ाली नहीं। जैसे अल्लाह तआला अगर किसी जगह फ़रमाता है कि वाललहु समीउन अलीम तो समीअ को पहले और बसीर को बाद में रखने में भी हिक्मत है ।

इस दावा के सबूत में यह विनीत इस निबन्ध में क़ुरआन करीम के कुछ शब्दों की क्रम की हिक्मत बताना चाहता है। अल्लाह तआला सूरह दहर में फ़रमाता है।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

(अलदहर आयत 3) इस जगह अपने आप यह सवाल पैदा होता है बल्कि कुछ ज़ाहिरी बातों को देखने वालों को यह एतराज़ सूझता है कि समा का वर्णन पहले क्यों किया।

यह आरोप कम समझ का नतीजा है क्योंकि अगर इन्सान के जन्म की उद्देश्य को समझा जाए और उस पर ग़ौर किया जाए। तो साफ़ पता लग जाता है कि इन्सान को कान की आंख की तुलना में ज़्यादा ज़रूरत है इस लिए कि एक अंधा अपनी पैदायश के उद्देश्य को पूरा कर सकता है, मगर उस के विपरीत एक ऐसा व्यक्ति जो पैदायशी बहरा हो इस उद्देश्य को पूरा करने में असमर्थ रह जाता है

अब मैं ऊपर वर्णन की गई बातों का सबूत और समा को पहले रखने की हिक्मत मग़रिबी उलूम की रोशनी में अहबाब की ख़िदमत में पेश करता हूँ

(1) स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला ने श्रवण का वर्णन इसलिए पहले किया है कि मां के गर्भ में कान की सम्पूर्णता आँख के मुक़ाबला में पहले होती है। और यह इस लिए है कि भ्रूण ने पैदा हो कर पहले उसी अंग से काम लेना होता है। भ्रूण की आँख की पुतली के आगे एक पर्दा होता है जो

आठवें महीना में जाकर ख़त्म होता है। (परन्तु कान के आगे इस प्रकार का कोई पर्दा नहीं होता) इस लिए आँख मां के गर्भ में काम नहीं कर सकती मगर कान मुकम्मल होते ही काम करना शुरू कर देते हैं।

(2) पैदा होने के बाद भी पहला उज़ू जो इन्सान के काम आता है , वह कान ही है। अत: बच्चा पैदा होते ही बुलंद आवाज़ को सुन सकता है। और चौंकता है। मगर उस के विपरीत बच्चा जन्म के वक़्त अंधा होता है। और सिर्फ रोशनी को अंधेरे से अन्तर कर सकता है मगर चीज़ों की शक्लों उनके दूरी या रंगों का एहसास इस में नहीं होता। कुछ सप्ताह के बाद बच्चे में धीमी आवाज़ भी सुन सकता है और इस में राग से आन्नद उठाने और आवाज़ की दिशा मालूम करने की योग्यता भी पैदा हो जाती है। (जो श्रवण शक्ति का काम है) मगर बच्चे में चीज़ों को देखने की योग्यता एक महीने के बाद जा कर पैदा होती है। और तीसरे महीने बच्चा माँ का चेहरा पहचान सकता है। और आँख उसकी हिलने वाली उंगली का अनुकरण कर सकती है। मगर उसको चीज़ों के दूर या नज़दीक होने का अभी ज्ञान नहीं होता। इसी लिए बच्चा दूर पड़े हुए लैम्प या चांद को पकड़ने की कोशिश करता है। रंगों के अन्तर में बच्चा को एक साल के बाद जा कर होती है इस से मालूम होता है कि कान मुक़ाबलतन जल्दी अपना काम शुरू कर सकते हैं।

(3) एक और कारण कान का वर्णन पहले करने का यह है कि इन्सान के लिए ज्ञान को प्राप्त करने की जन्म के बाद बल्कि इस से पहले गर्भ में भी सबसे पहली और ज़्यादा वसीअ खिड़की कान ही है। इन्सान को बाहरी दुनिया का जितना ज्ञान कान से होता है उतना आँख से नहीं होता। मैं यह बता चुका हूँ कि कान की सम्पूर्णता माता के गर्भ में आँख से पहले होती है।

परन्तु इस की विपरीत आँख के आगे पर्दा है। जो क़ुव्वत-ए-इरादी से खुलता है। इस लिए आँख इतना वक़्त काम नहीं कर सकती। आंख इतने नुक़ूश दिमाग़ पर जमा नहीं कर सकती जितने कान कर सकता है। अर्थात आँख के द्वारा किसी चीज़ का ज्ञान उसी वक़्त होगा। जब उस की तरफ़ तवज्जा की जाएगी। और यह आँख खोली जाएगी। मगर कान बग़ैर ध्यान और बिना इरादा के काम में लगा रहता है। अर्थात इन्सान चाहे किसी अन्य काम में व्यस्त हो। तो भी उसके कान काम करते रहते हैं। कान में एक और विशेषता यह है कि इस के द्वारा इन्सान हर वक़त ज्ञान हासिल कर सकता है यहां तक कि सोते समय भी। मगर सोते वक़्त आँख से ज्ञान हासिल करने की खिड़की बंद हो जाती है। और फिर मज़ा यह कि जन्मजात बच्चा अपना अधिकतर समय नींद में गुज़ारता है। (अत: बच्चा सिवाए दूध पीने और शौच इत्यादि के हर वक़त सोया रहता है मानो 24 घंटों में 20 घंटे सोता है) इस से कान की फ़ज़ीलत प्रकट होती है। क्योंकि कान से दिन में 24 घंटे ज्ञान सीखने का अवसर है। और आँख से मुश्किल से चार या पाँच घंटे। यद्यपि इसके बाद नींद का वक़्त कम हो जाता है। यहां तक कि जवान आदमी सिर्फ छ: या सात घंटे सोता है मगर फिर भी कान के मुक़ाबला में यह वक़्त थोड़ा है। क्योंकि वह पैदायश के दिन से मरते दम तक एक सैकण्ड के लिए भी काम नहीं छोड़ता।

अगर कहा जाए कि बच्चा सोते वक़्त कैसे सुन सकता है। कान का काम सिर्फ यह है कि हुवा की लहरों को दिमाग़ तक पहुंचा दे। आगे उस का सुनना समझना और महफ़ूज़ रखना दिमाग़ का काम है। सोते समय यद्यपि बच्चा आवाज़ को सुन नहीं सकता मगर उस का नक़्श दिल पर महफ़ूज़ रहता है, जो छिपे हुए तरीका से उसके आइन्दा आचार , आदतों को ढालता रहता है। अत: बच्चे के कान में अज़ान और इक़ामत कहने में भी यही हिक्मत है।

(4) फिर कान को इस लिए भी फ़ज़ीलत है कि सिर्फ यही एक खिड़की है जिसके द्वारा पैदा होने के थोड़ी ही देर बाद इस्लाम की शिक्षा का सार (अज़ान बच्चे के दिमाग़ पर नक़्श किया जा सकता है जो एक बीज का काम देता है। और उच्च तर्बीयत से वही बीज एक ख़ुशनुमा दरख़्त बन सकता है। इसके मुक़ाबला में आँख के द्वारा शरीयत का ज्ञान बहुत देर के बाद जाकर होता है। अर्थात पाँच छ: साल की उम्र में जब बच्चा पढ़ना सीखता है।

(5) कान के द्वारा ज्ञान सीखने के लिए शिक्षा की ज़रूरत नहीं। मगर आँख के द्वारा अर्थात पढ़ कर)ज्ञान सीखने के लिए शिक्षा की ज़रूरत है।

अत:95 प्रतिशत अनपढ़ लोग शरीयत का ज्ञान कान के द्वारा प्राप्त करते हैं। और सिर्फ कुछ एक शिक्षित लोग दूसरी खिड़की से लाभ उठा सकते हैं। और वह भी होश सँभाल कर अर्थात स्कूल में दाख़िल हो कर। अत: इस लिहाज़ से भी कान अफ़ज़ल है

(6) फिर कान का महत्तव और आँख पर फ़ज़ीलत इस

से भी साबित होती है कि बोलने की शक्ति का सम्बन्ध बल्कि सारा आधार श्रवण शक्ति पर है। बच्चे के दिमाग़ में पहले श्रवण का मर्कज़ बनता है। और इस के नतीजा में बोलने का मर्कज़ तैयार होता है। अत: अगर समा का मर्कज़ न बने तो गोयाई का मर्कज़ नहीं क़ायम हो सकता। यही कारण है कि जन्मजात बहरे, गूँगे भी होते हैं। मानो श्रवण शक्ति के दोष से एक और शक्ति भी नष्ट हो जाती है। और इन्सान न ज्ञान सीख सकता है। और न अपने विचारों का प्रकट जीभ से कर सकता है। सिवाए इस के कि कुछ इशारों से अपना काम चलाए।(स्पष्ट हो कि जो लोग 7 या 8 साल की उम्र में जाकर बहरे हो जाएं वे गूँगे नहीं होते। यह सिर्फ़ पैदायशी बहरे के बारे में है बल्कि ऐसी अवस्था में ज्ञान की प्राप्ति में उसकी आँख भी काम नहीं दे सकती। क्योंकि आँख के द्वारा जो चीज़ देखी जाती है। इस का नाम भी तो कान से ही सीखा जाता है। अत: पैदाइशी बहरा न सुन सकता है। न बोल सकता है। और न देखी हुई चीज़ों को समझता है। और सिवाए इसके कि वे दुनियावी व्यस्तता को देखकर ख़ुश हो। इन के द्वारा कोई ज्ञान हासिल नहीं कर सकता।

इसके विपरीत जन्मजात अंधा यद्यपि चीज़ को देख नहीं सकता। मगर वे कानों के द्वारा कई ज्ञान सीख सकता है।

(7) सोते वक़्त सबसे पहली शक्ति जो समाप्त होती है। वह देखना है। और सबसे आख़िरी शक्ति जो अपना काम छोड़ती है वह सुनना है। मानो कान ज़्यादा वक़्त तक काम करते रहते हैं। इसी तरह जागते वक़्त सबसे पहले एहसास क़ुव्वत-ए-सामिआ का होता है, और क़ुव्वत-ए-बासिरा का सबसे अख़ीर यूं तो कान नींद में भी काम करते रहते हैं। यद्यपि हिस पैदा नहीं होती। मगर यहां नष्ट होने से अभिप्राय कान का ज़ाहिरी काम अर्थात सुनना है। जहां तक उनका सम्बन्ध क़लब आमल से है।

(8) जिस तरह बचपन में कान आँख से पहले काम शुरू करते हैं। इसी तरह बुढ़ापे में कान ज़्यादा देर तक साथ देते हैं अत: अक्सर आदमी बुढ़ापे में आंखों के दोष और मोतिया इत्यादि की शिकायत करते हैं मगर थोड़े हैं जिनको सुनने की शक्ति की बीमारी होती हो।

(9) फिर कान को इस लिए भी फ़ज़ीलत है कि ख़ुदा का कलाम अर्थात वह्य मतलू चूँकि शब्दों में नाज़िल होती है इस लिए कान के द्वारा ही इस का ज्ञान होता है। अत: क़ुरआन क़रीम जैसी नेअमत भी हमको इसी द्वारा से मिली।

(10) अत: मालूम हुआ कि कानों के द्वारा ज्ञान सीखना और जिस्मानी ज़िंदगी अनिवार्य हैं। अर्थात जब तक सांस है इस वक़्त तक कान काम करते रहेंगे मगर आँख की यह हालत नहीं। जिस तरह अल्लाह तआला ने जिस्मानी ज़िंदगी के लिए हवा को अव्वल नम्बर पर रखा है और इस के बिना इन्सान दो मिनट से ज़्यादा नहीं रह सकता। इसी तरह उसने रुहानी उलूम के लिए कान को अव्वल नम्बर पर रखा और इस रस्ता से ज्ञान सीखने के लिए रोशनी की बजाय हवा को माध्यम निर्धारित किया ताकि इन्सान की जिस्मानी ज़िंदगी का क़ियाम और रुहानी उलूम का सीखना एक ही लड़ी में जोड़ कर के जिस्मानी और रुहानी सिलसिला में समानता प्रकट कर दी जाए।

फिर अल्लाह तआला ने कान के लिए हवा को माध्यम निर्धारित कर के हमें यह शिक्षा दी है कि जिस तरह जिस्मानी ज़िंदगी के क़ियाम के लिए इन्सान को हवा की हर दम और मरते वक़्त तक ज़रूरत है। इसी तरह रुहानी ज़िंदगी के क़ियाम के लिए इन्सान को रुहानी उलूम की हर वक़त और मरते दम तक ज़रूरत है। अत: हमें कानों से लाभ उठाने की कोशिश करनी चाहिए और मरते दम तक रुहानी उलूम को सीखने की कोशिश करनी चाहिए।

यूं प्रमाणित हुआ कि कान इन्सान के लिए आँख के मुक़ाबला में ज़्यादा ज़रूरी अंग है और बहुत बड़ी नेअमत है। और ऐसी नेअमत है कि जिसके बिना इन्सान के जन्म का उद्देश्य दोषपूर्ण रहता है। और इन्सान रुहानी उलूम की प्राप्ति से वंचित रहता है। इस लिए हमें अल्लाह तआला का शुक्र करना चाहिए कि उसने केवल अपने फ़ज़ल से रहमानियत के गुणों के अधीन हमको कान और आँख और अन्य अंग दिए। मगर कान का तोहफा हमारे ख़ास शुक्रिया के योग्य है। इसी लिए अल्लाह तआला ने कमाल हिक्मत के साथ सूरह दहर में अपने इस एहसान को बंदे पर प्रकट करते हुए कान का वर्णन पहले किया है। अल्लाह तआला हम सबको क़ुरआन-ए-करीम के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ समझने और इस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

(उद्धरित रिव्यू आफ रीलीजनज़ जुलाई 1926 ई पृष्ठ 21 से 27)